



प्रधान संपादक की कलम से :

प्रिय पाठकगण,

‘अस्मिता’ का सितम्बर-अक्टूबर 2026 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हृदय में हर्ष और आत्मीयता का अनुभव हो रहा है। हमारा प्रयास है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा की गहराई, वैज्ञानिक दृष्टि और सांस्कृतिक चेतना केवल ग्रन्थों तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे विचारों, व्यवहार और जीवन का हिस्सा बने और सरल भाषा में आप तक पहुँचती रहे।

इस अंक में देवी-पूजा की आन्तरिक यात्रा, बंगाल की दुर्गापूजा, भारतीय नारी-शक्ति, कठोपनिषद् का यम-नचिकेता संवाद, वैदिक कर्मयोग, भक्तों के गुण और ऋग्वेद का विश्वकर्मा सूक्त हमें आध्यात्मिक चिन्तन से जोड़ते हैं। आत्मा, मोक्ष और विभिन्न दर्शनों में पर्यावरण-दृष्टि जैसे विषय भी विचार के नए द्वार खोलते हैं।

सीमन्तोन्नयन संस्कार, स्वामी विवेकानन्द के जीवनादर्श, राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक की भूमिका और विद्या एवं शिक्षा के मूल स्वरूप के साथ उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान-परम्परा के समावेश पर भी चर्चा है। वहीं सर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरय्या के योगदान और लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्रीय एकता के आदर्श हमें प्रेरित करते हैं।

हठप्रदीपिका में हठयोग, विश्राम का विज्ञान और योगनिद्रा, आयुर्वेद की दृष्टि से वन्ध्यत्व (निःसन्तानता) जैसे विषय स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाते हैं। ज्योतिष की चार पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन तथा श्रीगणेश से प्रबन्धन, सन्तुलन और त्याग की सीख इस अंक को और विविधता देते हैं।

भारत से मॉरीशस तक जीवित गुरु-शिष्य परम्परा तथा Global Sanskrit Forum की यात्रा भारतीय ज्ञान के वैश्विक विस्तार की सुन्दर झलक प्रस्तुत करती हैं।

एक और सुखद समाचार आपके साथ साझा करना चाहेंगे। बैंकॉक, थाईलैंड में सम्पन्न पंचम वैश्विक संस्कृत सम्मेलन (5th GSC-2026) की प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों को हम ‘अस्मिता’ के आगामी नवम्बर-दिसम्बर अंक में आपके सामने लाएँगे।

साथ ही, छठे वैश्विक संस्कृत सम्मेलन (6th GSC-2027) की तैयारियाँ भी आरम्भ हो रही हैं। यह सम्मेलन जर्मनी, स्विट्जरलैंड, नीदरलैंड एवं बेल्जियम में स्थित संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में होना सुनिश्चित हुआ है। यह हमारी साझा ज्ञान-यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव होगा।

सभी लेखकों, शोधकर्ताओं, समीक्षकों, सम्पादकीय सहयोगियों और पाठकों का हृदय से आभार। आपका स्नेह और विश्वास ही ‘अस्मिता’ को निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

आशा है, यह अंक आपको कुछ नया जानने, कुछ नया सोचने और अपनी समृद्ध विरासत से और गहराई से जुड़ने का अवसर देगा।

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित।

डॉ. राजेश कुमार मिश्र
प्रधान संपादक, अस्मिता

अन्ताराष्ट्रिय महासचिव, ग्लोबल विदुषी फोरम एवं ग्लोबल संस्कृत फोरम
असिस्टेंट प्रोफेसर, नव नालन्दा महाविहार,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

अस्मिता II ASMITAA
ज्ञान की ♦ नारी की ♦ भारत की



From the Editor-in-Chief's Desk :

Dear Readers,

It is a pleasure to present the September–October 2026 issue of ASMITAA. Our endeavour is to bring the depth, scientific outlook and cultural wisdom of Indian Knowledge Traditions beyond the pages of ancient texts, making them accessible, meaningful and relevant to our everyday lives.

Today, 'ASMITAA' has grown beyond being merely a magazine and has established a distinctive identity on the International Intellectual and Cultural platform. The participation of scholars, writers and researchers from India and several other countries reflects its steadily expanding Global Presence.

This issue explores *Devi Puja, Durga Puja in Bengal, Indian womanhood, the Yama–Nachiketa dialogue, Vedic Karma Yoga, the qualities of devotees, and the Rigveda's Vishwakarma Sukta*. Articles on Atman, Moksha, and environmental perspectives in Indian philosophy invite us to think deeper.

We also bring you articles on *Simantonnayana Samskara, Swami Vivekananda, the role of teachers in nation-building, Vidya and education, and Indian Knowledge Systems in higher education*. The contributions of Sir Mokshagundam Visvesvaraya and Sardar Vallabhbhai Patel's ideals of national unity offer further inspiration.

Topics such as *Hatha Yoga in the Hathapradipika, the Science of Rest and Yoga Nidra, and Vandhyatva (infertility) through Ayurveda* highlight health and well-being. A comparison of four Jyotisha systems and lessons in management, balance, and letting go from Shree Ganesha add to the variety.

The *Guru–Shishya tradition from India to Mauritius* and the journey of the Global Sanskrit Forum reflect the growing global reach of Indian knowledge and culture.

We are also pleased to share that the **Fifth Global Sanskrit Conference (5th GSC–2026)** was successfully held in Bangkok, Thailand. We will share its highlights and achievements in the upcoming issue of ASMITAA.

Meanwhile, preparations are beginning for the **Sixth Global Sanskrit Conference (6th GSC–2027)**, to be organised jointly under the auspices of institutions based in **Germany, Switzerland, the Netherlands, and Belgium**. We look forward to another meaningful step in this shared journey.

Our heartfelt gratitude to all our authors, researchers, reviewers, editorial contributors and esteemed readers.

It is through your support, affection and trust that 'ASMITAA' continues its journey of Knowledge, Feminine Strength and Awareness of Bharata, while establishing a distinctive identity at the International level.

We hope this issue inspires fresh thoughts, new learning, and a deeper connection with our rich heritage.

With warm regards and best wishes.

Dr. Rajesh Kumar Mishra
Editor-in-Chief, ASMITAA

International General Secretary, Global Vidushi Forum & Global Sanskrit Forum
Assistant Professor, Nava Nalanda Mahavihara
Ministry of Culture, Government of India